1857 की क्रान्ति

- लार्ड वेलेजली ने सान्धी चलाई
  - सहायक संधि 1798 में
  - सर्वप्रथम संधि ⇒ भरतपुर ने 29 Sep. 1803 में राजा रणजीत सिंह ने
  - विस्तृत संधि ⇒ अलवर ने 14 Nov 1803 को बख्तावर सिंह ने
- लार्ड हेस्टिंग्स ने राजाओं के लिए
  - सान्धी चलाई ⇒ आश्रित पार्थक्य की 1817
    - ⇒ सर्वप्रथम संधि ⇒ करौली ने 9 Nov 1817 को हरवक्षपाल
    - ⇒ विस्तृत संधि ⇒ कोटा ने 26 Dec 1817 को जालिमसिंह ने
    - ⇒ अन्तिम संधि ⇒ सिरोही ने 11 Sep 1823 को शिवसिंह ने

- ⇒ क्रान्ति के समय भारत का गवर्नर जनरल था ⇒ लार्ड कैनिंग
- ⇒ राज० का पहला / प्रथम A.G.G (एजेंट to गवर्नर जनरल था ⇒ मि० लॉकेट
- ⇒ 1857 की क्रान्ति के समय A.G.G था ⇒ पैट्रिक लॉरेंस
- ⇒ A.G.G का मुख्यालय / केन्द्र बनाया ⇒ अजमेर में 1832 में
- ⇒ A.G.G का ग्रीष्मकालीन मुख्यालय बनाया ⇒ माउन्ट आबू (सिरोही में) 1845 में

→ क्रान्ति के समय रियासती शासक थे।)

रियासतें		शासक		P.A
मेवाड़	→	स्वरूपसिंह	→	मेजर शॉवर्स
मारवाड़	→	तख्तसिंह	→	मैक मोसन / मैसन
जयपुर	→	रामसिंह II	→	मेजर ईडन
कोटा	→	राव रामसिंह	→	मेजर बर्टन
भरतपुर	→	जसवंतसिंह	→	मॉरीसन
सिरोहि	→	शिवसिंह	→	J.D हॉल
प्रतापगढ़	→	दलपतसिंह	→	मेजर रॉक
अलवर	→	विनयसिंह		
करौली	→	मदनपाल		
धौलपुर	→	भगवंतसिंह		
बीकानेर	→	सरदारसिंह		
टोंक	→	वजीरुद्दौला		
डुंगरपुर	→	उदयसिंह		
बांसवाड़ा	→	लक्ष्मणसिंह		
झालावाड़	→	पृथ्वीसिंह		

राज० मे कुल सैनिक छावनिया थी = 6

Trick एनीना ब्याह दे खे

- ए — एरिनपुरा छावनीया
- नी — नीमच छावनीया
- ना — नसीराबाद छा०
- ब्याह — ब्यावर छावनी
- दे — देवली छावनी
- खे — खेरवाड़ा छावनी

एरिनपुरा
→ प्रारम्भ ⇒ मारवाड़
→ वर्तमान ⇒ पाली

नीमच
→ प्रारम्भ ⇒ मेवाड़
→ वर्तमान ⇒ M.P

नसीराबाद
→ अजमेर

ब्यावर
→ ब्यावर

देवली
→ टोंक

note ⇒ ब्यावर व खैरवाड़ ऐसी सैनिक छावनी जहा विद्रोह / क्रान्ति नही हुई थी।

खैरवाड़ा
→ उदयपुर

⇒ क्रान्ति का तात्कालिक कारण
→ ब्राउन बैश राइफल्स के स्थान पर एनफील्ड राइफल्स का प्रयोग करना जिनके कारतूसो का निर्माण गाय + सुअर की चर्बी से होता था जिनको चलाने से पहले मुह से खोलना होता था जिसे भारत में हिन्दु व मुस्लिम दोनो का धर्म भ्रष्ट हो रहा है।

⇒ भारत में क्रान्ति की पहली घटना हुई
→ बैरकपुर छावनी (प० बंगाल)
→ सैनिक टुकड़ी ⇒ 34 Ni का सैनिक था ⇒ मंगल पाण्डेय
→ यहा विद्रोह हुआ ⇒ 29 March 1857
→ घटना ⇒ मंगल पाण्डे द्वारा दो अंग्रेजी अधिकारी कैप्टन बाग + ह्यूरसन को गोली मार दी।

note ⇒ मंगल पाण्डेय को 8 अप्रैल 1857 को फासी दे दी गई।

note ⇒ भारत का पहला शहीद, या पहला फासी प्राप्त करता या पहला विद्रोही, या क्रांति की पहली गोली चलाने वाला मंगल पाण्डेय को कहते है।

राज॰ में क्रान्ति की शुरुआत हुई

→ नसीराबाद छावनी (अजमेर)

- → समय क्रान्ति का ⇒ 28 मई 1857 को राज॰ में सर्वप्रथम हुई।
- → अंग्रेजी अधिकारी था ⇒ प्रिचार्ड / पिचिपार्ड
- → विद्रोह सैनिक टुकड़ी ⇒ 30 Ni, ⇒ 50 Ni > मुख्य सैनिक टुकड़ी
- → नेतृत्वकर्ता ⇒ बख्तावर सिंह
- → 2 अंग्रेजों की हत्या कर दी ⇒ न्यूबरी, ⇒ स्पोटिस वुड

<u>note</u> ⇒ यहाँ अंग्रेज अधिकारी द्वारा भारतीय सैनिकों के हथियार जप्त कर लिए थे इस कारण विद्रोह हुआ।

धौलपुर विद्रोह

- → क्रान्ति के समय धौलपुर शासक ⇒ भगवन्तसिंह ⇒ अंग्रेजों का वफादार था
- → नेतृत्वकर्ता ⇒ रामचन्द्र और हीरालाल (जो ग्वालियर + इन्दौर (मध्यप्रदेश) से आये।
- → यहा क्रांति का दमन करने आयी ⇒ पटियाला सेना (पंजाब की)

<u>note</u> ⇒ राज॰ का एकमात्र क्रान्ति स्थल जिसमें क्रांतिकारी बाहर से आए और दमन कर्ता भी बाहर से आए व धौलपुर था।

नीमच छावनी

- ⇒ वर्तमान में M.P
- ⇒ प्रारम्भ में था ⇒ मेवाड़ रियासत
- ⇒ मेवाड़ शासक ⇒ स्वरूपसिंह
- ⇒ मेवाड़ का P.A था ⇒ मेजर शावर्स / शॉवर्स
- ⇒ नीमच का अंग्रेज अधिकारी ⇒ एबॉट / अबॉट

- क्रांति का नेतृत्व किया ⇒ M मोहम्मद अली बेग
  ⇒ हीरासिंह
- मारा गया अंग्रेज ⇒ सार्जेण्ट
- क्रान्ति का समय ⇒ 3 जून 1857
- सैनिक नीमच को लूटकर देवली (टोंक) चले गये।
- नीमच से 40 अंग्रेजों ने भागकर शरण ली ⇒ डूंगला गाँव (चित्तौड़गढ़)
  - ↳ रुघाराम किसान के यहा शरण ली।
- 40 अंग्रेजों को रिहा करवाया था ⇒ मेजर शॉवर्स ने
  - ↳ इनको शरण दी ⇒ जगमंदिर (पिछोला झील, उदयपुर)

कोटा विद्रोह

- क्रान्ति के समय कोटा का शासक ⇒ राव रामसिंह ⇒ अंग्रेजों का वफादार था।
- कोटा का P.A मेजर बर्टन
- विद्रोह / क्रान्ति का समय ⇒ 15 Oct. 1857
- नेतृत्वकर्ता ⇒ मेहराब खां + जयदयाल
- यहाँ क्रान्तिकारियो ने हत्या की ⇒ मेजर बर्टन + 2 पुत्र + डॉ सेडलर कान्टम
  - 2 पुत्र → फ्रेंक, आर्थर
- बर्टन का सिर काटकर पूरे कोटा शहर में घुमाया था।
- राजा रामसिंह को कोटा किले में कैद कर दिया था।
- राव रामसिंह ने क्रान्तिकारियो से समझौता करने के लिए मुलाकात की ⇒ मथुरेशजी मन्दिर (कोटा) के महन्त कन्हैयालाल गोस्वामी से।
- रामसिंह पर अधिकार पत्र पर हस्ताक्षर करवाए जिसमें उसने मेजर बर्टन की हत्या की जिम्मेदारी अपने सिर पर ले ली।
- अंग्रेजों के कहने पर करौली शासक मदनपाल ने जनवरी 1858 को रॉव रामसिंह को रिहा करवाया था।

- जनरल रॉबर्ट्स ने मार्च 1858 में क्रांति का कोटा में दमन किया था।
- कोटा क्रान्तिकारियों के अधिकार में 6 माह रहा था।

note ⇒ राज० का क्रान्ति का ऐसा केन्द्र जो छावनी न होकर भी क्रान्ति का सबसे बड़ा केन्द्र बना वह कोटा था।

note ⇒ अंग्रेजों ने कोटा शासक राव रामसिंह की तोपों की सलामी 11 से घटाकर 13 कर दी।

note ⇒ अंग्रेजों ने करौली शासक मदनपाल की तोपों की सलामी 13 से बढ़ाकर 17 कर दी।

एरिनपुरा छावनी विद्रोह

- वर्तमान में ⇒ पाली
- प्रारंभ में ⇒ मारवाड़ / जोधपुर रियासत के अन्तर्गत आती थी
- जोधपुर का शासक था ⇒ तख्तसिंह
- जोधपुर का P.A था ⇒ मैक मीसन / मैसन
- नेतृत्वकर्ता ⇒ तिलकराम, शीतलप्रसाद, मोतीखां
- विद्रोह हुआ ⇒ 21 Aug 1857
- यहां हत्या की ⇒ A.G.G के पुत्र अलेक्जेण्डर की।
- यहां के सैनिक दिल्ली चल दिए और नारा दिया ⇒ चलो दिल्ली, मारो फिरंगी
- एरिनपुरा के सैनिकों की कुशलसिंह चंपावत से मुलाकात हुई
  - कौन था ⇒ आऊवा (पाली) का ठाकुर था
  - कुलदेवी ⇒ सुगाली माता
  - मंदिर ⇒ आऊवा (पाली)
  - उपनाम ⇒ 10 सिर 54 हाथ वाली देवी

→ 1857 की क्रान्ति की देवी

8 Sep 1857 - बिथौड़ा का युद्ध

- कुशालसिंह चंपावत → जीत
- ओनाड़सिंह ⇒ मारा गया + कुशराजसिंह + हीथकोट ⇒ हार

18 Sep 1857 चेलावास का युद्ध / काले गोरों का युद्ध

- कुशालसिंह चंपावत
- A.G.G पैट्रिक लॉरेंस + P.A मैक मोसन

⇒ मैक मोसन का सिर काटकर आऊवा के किले पर टांगा दिया

⇒ आऊवा किले को क्रान्ति का विजयस्तम्भ कहते हैं।

20 Jan 1858 आऊवा का युद्ध

- जनरल होम्स → जीत
- पृथ्वीसिंह → हार

→ युद्ध में जीत की आसा न देखकर कुशालसिंह आऊवा किला अपने छोटे भाई पृथ्वीसिंह को सौंपकर चला जाता है।

→ कुशालसिंह ने युद्ध के बाद भागकर शरण ली कोठारिया गाँव उदयपुर में जोतसिंह के यहा शरण ली।

note ⇒ कुशालसिंह को 8 अगस्त 1860 को नीमच (M.P) में पकड़ा गया।

note ⇒ कुशालसिंह की जाँच के लिए टेलर आयोग गठित किया गया जिसने कुशालसिंह को निर्दोष घोषित कर दिया।

note ⇒ कुशालसिंह ने अपना अंतिम समय उदयपुर में बिताया।

note ⇒ जनरल होम्स युद्ध के बाद सुगाली माता की मूर्ति उठाकर अजमेर ले गया जो वर्तमान में बांगड संग्रहालय में स्थित है।

तात्या टोपे

- जन्म ⇒ येवला गाँव (M H)
- वास्तविक नाम ⇒ रामचन्द्र पाण्डुरंग
- इसके लिए आर्थिक सहायता की **अमरचंद बांठिया** ने
    - ⇒ निवासी ⇒ बीकानेर
    - ⇒ उपनाम ⇒ क्रान्ति का दानवीर कर्ण
        - ⇒ क्रांति का भामाशाह
    - ⇒ अंग्रेजों ने फांसी दे दी
    - ⇒ उपनाम ⇒ राज० का पहला शहीद / फांसी प्राप्तकर्ता
    - ⇒ राज० का मंगलपाण्डेय
- राज० में कुल 2 बार आया
    - ⇒ प्रथम बार 8 Aug 1857 को माण्डलगढ भीलवाड़ा में
    - ⇒ दूसरी बार 11 Dec 1857 को बांसवाड़ा में
    - ⇒ **राज०** में इसकी मदद की
        - ⇒ सलुम्बर का ठाकुर केसरीसिंह
        - ⇒ टोंक का नासिर मोहम्मद खाँ

→ टोपे का मित्र मानसिंह नरुका की धोखेबाजी से नरवर के जंगल (M.P) में पकड़वाया था ⇒ 8 Apr 1859

→ टोपे को फांसी दी गई ⇒ 18 Ap. 1859 को शिवपुरी (M.P) में सिप्रा नदी के किनारे।

note ⇒ राज० का एकमात्र राजा / शासक जो अंग्रेजों की मदद के लिए अपनी सेना लेकर रियासत से बाहर गया ⇒ बीकानेर का सरदार सिंह।

note ⇒ अंग्रेजों की क्रांति में तन-मन-धन से सहायता करने वाला जयपुर शासक रामसिंह II था

⇒ अंग्रेजों ने खुश होकर रामसिंह II को सितार ए हिन्द की उपाधि दी।

⇒ कवि शंकरदान ने कहा ⇒ "अंग्रेजों की मीठा ठग"

⇒ बांकीदास ने कहा " आयो अंग्रेज मुल्क रे ऊपर"